Chapter 16

The Purpose of Education

I think it is very important to find out for ourselves what the function of education is. There have been so many statements, so many books, so many philosophies and systems that have been invented or thought of by so many people, as to what the purpose of education is, what we live for. Apparently, every system so far has failed, including the very latest, because they have produced in the world neither peace among human beings nor deep cultural advance—the cultivation of the mind and the full development of the mind. Is it necessary to have this system?

It seems to me it is very important for each one of us to find out what the function of education is, especially in a university—why we are educated, and at what level our education is. When you look around the world, you find education has failed because it has not stopped wars, nor has it brought peace to the world, nor has it brought about any kind of human understanding. On the contrary, our problems have been increased, there are more devastating wars and greater misery. So, is it not important for each of us to find out what the whole intention of being educated is? Great authorities tell us what education is or what it is not or what it should be, but such authorities, like all specialists, do not give the true meaning of education. They have a particular point of view, and therefore it is not a total point of view. Therefore, it seems to me, it is very important to put aside all the authority of specialists, of educationalists, and to find out for ourselves what the

शिक्षा का उद्देश्य

मैं सोचता हूं कि यह बहुत महत्त्वपूर्ण है कि हम स्वयं ही यह पता लगाएं कि शिक्षा का क्या कार्य है। शिक्षा का उद्देश्य क्या है, हम किस लिए जी रहे हैं, इस बारे में अनेक तरह की बातें हैं, कितनी ही पुस्तकें हैं, कितने ही दार्शनिक सिद्धांतों और पद्धतियों का आविष्कार किया गया है और कितने ही लोगों ने इस पर विचार किया है। लेकिन यह बिलकुल साफ है कि हर शिक्षा-पद्धति, चाहे वह एकदम नयी हो या पुरानी, असफल हो चुकी है, क्योंकि वह इस संसार में न तो मनुष्यों के बीच शांति ला पायी है और न उसने कोई गहन सांस्कृतिक उत्थान का काम किया है--अर्थात मन के उन्नयन और संपूर्ण विकास में कोई पद्धति मदद नहीं कर पायी है। क्या इस पद्धति की आवश्यकता है?

मुझे लगता है कि यह बहुत ज़रूरी है कि हममें से हरएक इसका पता लगाए कि शिक्षा का कार्य आखिर क्या है--विशेष तौर पर किसी विश्वविद्यालय के अंतर्गत, हमें शिक्षित क्यों किया जाता है, और वर्तमान में हमारी शिक्षा कहां है। जब आप दुनिया में चारों तरफ नज़र डालते हैं तो देखते हैं कि शिक्षा असफल रही है क्योंकि इसने युद्धों को रोकने में मदद नहीं की है, और न तो इसने संसार में शांति लाने में सहायता की है, और न ही इसने मनुष्य को किसी प्रकार की समझ ही प्रदान की है। इसके विपरीत, हमारी समस्याओं में और अधिक वृद्धि हुई है, और अधिक विध्वंसकारी युद्ध हो रहे हैं तथा पहले से बड़े क्लेश पैदा हो रहे हैं। अतः क्या हममें से हरएक के लिए यह पता लगाना ज़रूरी नहीं है कि शिक्षित होने के पीछे कुल मंशा क्या है? बड़े-बड़े अधिकारी, विद्वान हमें यह बताते हैं कि शिक्षा क्या है, या क्या नहीं है, अथवा क्या होनी चाहिए, परंतु ऐसे अधिकारी विद्वान, उन तमाम विशेषज्ञों की ही तरह, शिक्षा का सच्चा अर्थ नहीं जानते। उनका अपना एक विशेष दृष्टिकोण होता है अतएव उसमें समग्रता नहीं होती। इसलिए मुझे यह लगता है कि इस संबंध में सारे विशेषज्ञों, सारे शिक्षा-शास्त्रियों की मान्यताओं को परे हटाकर, शिक्षा का अर्थ क्या है, हमें शिक्षित क्यों किया जाता है, और यह

meaning of education is, why we are educated, and at what level this education is to take place. Is education to take place only at the technological level—that is, to have a job, to pass through various examinations in order to have a job—or is education a total process, not merely at the bread and butter level and the organization level of that kind?

शिक्षा किस स्तर की हो, इन बातों का पता लगाना हमारे लिए बेहद ज़रूरी है। प्रश्न यह है कि क्या शिक्षा केवल तकनीकी स्तर पर ही हो--यानी शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ नौकरियां पाने, और नौकरियां पाने के प्रयोजन से विभिन्न परीक्षाएं पास करना ही है या फिर यह एक सर्वांगीण प्रक्रिया है, न कि सिर्फ रोजी-रोटी कमाने का साधन और उसी स्तर पर उसका संगठन?

Is it not important for each one of us to find out what this education implies, the total education of man? If we can find out, not as a group of people, but as individuals, what this education implies, what the principles of this total education of man are, then we can create a different world. We see that so far, no form of revolution has produced peace in the world—even the communist revolution has not brought about great benefit to man—nor has any organized religion brought peace to man. Organized religions may give an illusory peace to the mind, but real peace between man and man has not been produced. So, is it not very important for each one of us to find out how to improve this state of affairs?

सर्वांगीण शिक्षा क्या है, इसके निहितार्थ क्या हैं, यह पता लगाना क्या हममें से प्रत्येक के लिए महत्त्वपूर्ण नहीं है? यदि हम इसका पता लगा सकें, किसी वर्ग-विशेष से जुड़कर नहीं बल्कि स्वतंत्र रूप से, कि मानव मात्र के लिए महत्त्व रखने वाली ऐसी सर्वांगीण शिक्षा के मूलभूत तत्व कौन से हों, तभी हम एक अलग तरह का विश्व बना सकेंगे। अभी तक हम देखते आए हैं कि किसी भी प्रकार की क्रांति संसार में शांति लाने में कामयाब नहीं हुई है--यहां तक कि साम्यवादी आंदोलन से भी मनुष्य का कोई बड़ा हित नहीं हो पाया--और न किसी अन्य प्रकार के संगठित धर्म के द्वारा मनुष्य शांति पा सका है। संगठित धर्म शायद मनुष्य को भ्रामक शांति दे पाते हों, परंतु मनुष्यों के बीच जिस प्रकार की शांति अपेक्षित है वैसी शांति देने में वे असफल रहे हैं। इसलिए, क्या ऐसा नहीं लगता कि हममें से प्रत्येक के लिए इस बात को समझना ज़रूरी है कि इस प्रकार की परिस्थितियों को कैसे बदला जा सकता है?

We may pass examinations, we may have various kinds of jobs, but in an overpopulated country like India where there are so many linguistic and religious divisions, there is always a threatening of wars, there is no security, everything about us is disintegrating. In order to solve this problem, is it not important to inquire—not superficially, not argumentatively, not by putting one nation against another or one idea against another—and to find out, each one of us, the truth of the

हो सकता है, हम इम्तिहान पास लें, हमें कई तरह की नौकरियां मिल जाएं, परंतु भारत जैसे देश में जहां जनसंख्या की आधिक्य एक बड़ा प्रश्न है, जहां अनेक तरह के भाषाई और धार्मिक विभाजन हैं, युद्धों के फूट पड़ने की आशंका हमेशा बनी रहती है, सुरक्षा कहीं नहीं है। हमारे आसपास सब कुछ विखंडित होता जा रही है। इस समस्या को सुलझाने के लिए, क्या जांच-पड़ताल करना ज़रूरी नहीं है? एक ऐसी जांच-पड़ताल जो सतही न हो, जो कोरा वाद-विवाद न हो, जिसका उद्देश्य एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र के विरोध में, या एक विचारधारा को दूसरे के विरोध में खड़ा करना न हो, बल्कि जिसके द्वारा हममें से हर कोई इसकी ठोस

matter? Surely, truth is entirely different from information, from knowledge. Neither battles nor the latest atomic destructive weapons nor the totalitarian systems of thought, either political or religious, have solved anything. So we, you and I, cannot rely on any system or any opinion but must really try to find out for ourselves what the whole purpose of being educated is after all, that is what we are concerned with.

सच्चाई का पता लगा पाए। इसमें संदेह नहीं कि सत्य सूचना या जानकारी से एकदम भिन्न बात है। न तो लड़ाइयों ने, न आधुनिकतम आणविक विनाशकारी हथियारों ने, और न ही किसी भी प्रकार की कट्टर धार्मिक अथवा राजनैतिक विचारधारा ने किसी भी समस्या का निदान किया है। इसलिए हम, यानी आप और मैं, किसी विचारधारा या पद्धति पर निर्भर नहीं रह सकते, बल्कि हमें वास्तव में स्वयं ही यह पता लगाने का प्रयत्न करना होगा कि शिक्षित होने का कुल आशय आखिरकार क्या है, और यही प्रश्न हमारे लिए विचारणीय है।

Does education cease when you pass an examination and have a job? Is it not a continual process at all the different levels and processes of our consciousness, of our being, throughout life? That requires not mere assertion of information but real understanding. Every religion, every school teacher, every political system, tells us what to do, what to think, what to hope for. But is it not now very important that each one of us should think out these problems for ourselves and be a light to ourselves? That is the real need of the present time—how to be a light to ourselves, how to be free from all the authoritative, hierarchical attitude to life so that each one of us is a light to him. To be that, it is very important to find out how to be, how to let the light come into being.

क्या परीक्षाएं पास कर लेने और नौकरी पा लेने पर शिक्षा का कार्य पूर्ण हो जाता है? क्या शिक्षा एक ऐसी सतत प्रक्रिया नहीं होती जो हमारी चेतना के, हमारे अंतस् के भिन्न-भिन्न तलों पर, अनेक गतिविधियों में, निरंतर चलती ही रहती है? इसके लिए सिर्फ जानकारी के दावे की नहीं बल्कि वास्तविक समझ की दरकार होती है। हर धर्म, हर अध्यापक, हर राजनैतिक प्रणाली, ये सब हमें यह बताने में लगे हैं कि हम क्या करें, क्या सोचें और क्या आशाएं रखें। परंतु हमारे लिए क्या अब यह ज़रूरी नहीं हो गया है कि हममें से हरएक खुद ही इस पर विचार करे? आज की वास्तविक आवश्यकता यही है कि अपने लिए हम स्वयं ही प्रकाश बनें, परंपरा की शक्ति से पोषित प्रभुतावादी प्रवृत्ति से जीवन को मुक्त रखें ताकि हममें से प्रत्येक अपने ही भीतर अपना प्रकाश बन सके। वैसा हो पाने के लिए यह खोज लेना बहुत महत्त्वपूर्ण है कि अपने भीतर वह प्रकाश कैसे जाग्रत हो, उस प्रकाश के प्रकट होने के लिए हम क्या कर सकते हैं।

So, is it not the function of education to help man to bring about a total revolution? Most of us are concerned with partial revolution, economic or social. But the revolution of which I am talking is a total revolution of man at all the levels of his consciousness, of his life, of his being. But, that requires a great deal of understanding. It is not the result of

अतः शिक्षा का कार्य क्या यह नहीं है कि समग्र क्रांति लाने में वह मनुष्य की सहायता करे? हममें से अधिकांश आंशिक क्रांति के बारे में सोचते हैं, चाहे वह आर्थिक हो या सामाजिक। परंतु जिस क्रांति की बात मैं कह रहा हूं वह हर स्तर पर, मनुष्य की चेतना, उसके जीवन और अस्तित्व में होने वाली संपूर्ण क्रांति है। पर उसके लिए बहुत गहरी समझ का होना आवश्यक है। यह किसी सिद्धांत या विचार-पद्धति का परिणाम नहीं होती। इसके

any theory or any system of thought. On the contrary, no system of thought can produce a revolution; it can only produce a particular effect, which is not a revolution. But the revolution which is essential at the present time can only come into being when there is a total apprehension of the way in which man's mind works—not according to any particular religion or any particular philosophy like Marxism or any system like the capitalist system—that is when there is the understanding of ourselves as a total process. It seems to me, that is the only revolution that can bring about lasting peace.

विपरीत, किसी भी वैचारिक संरचना के दायरे में कोई क्रांति घटित नहीं हो सकती, यह संरचना अपना एक विशिष्ट प्रभाव तो छोड़ सकती है पर वह प्रभाव क्रांति नहीं है। परंतु आज जिस क्रांति की आवश्यकता है वह केवल तब संभव है जब मनुष्य का मन जिस रीति से कार्य कर रहा है उसकी पूरी समझ हममें हो, और यह समझ किसी धर्म विशेष या किसी विशेष दार्शनिक सिद्धांत जैसे मार्क्सवाद से या किसी व्यवस्था विशेष जैसे पूंजीवाद से नहीं आ सकती। तात्पर्य यह है कि जब एक संपूर्ण प्रक्रिया के रूप में स्वयं की समझ हममें होगी, तभी वह क्रांति संभव है। मुझे ऐसा लगता है कि एकमात्र वैसी क्रांति ही स्थायी शांति स्थापित कर पाएगी।

Surely, such a thing implies, does it not, the unconditioning of the mind because we are all conditioned by the climate, by the culture, by the religion, by the political or economic system, by the society in which we live. Our minds are shaped from the very beginning until we die, and so we meet the problems of life either as a Hindu or as a Christian or as a Communist or something else. Life is full of complications, it is moving all the time. Yet the way of our living is determined by a conditioned mind, and the conditioned mind translates the problems of life according to its own limitations. So is it not important, if we would solve this problem, to find out how to uncondition the mind so that the meeting of the problem becomes much more important than the mere solution of the problems?

ज़ाहिर है इसका मतलब होगा मन का संस्कारबद्धता से मुक्त होना, क्योंकि हम सभी अपने पर्यावरण, संस्कृति, धर्म, राजनीतिक अथवा आर्थिक व्यवस्था और जिस समाज में हम रहते हैं उसके द्वारा, विभिन्न प्रकार से संस्कारबद्ध हो जाया करते हैं। बिलकुल प्रारंभ से अपनी मृत्यु होने तक हमारे मन निरंतर इस प्रकार ढाले जाते हैं कि हम जीवन की समस्याओं का सामना एक हिंदू या ईसाई अथवा कम्युनिस्ट या किसी और प्रकार की पहचान से जुड़े रहकर करते हैं। जीवन जटिलताओं से भरपूर है, यह सतत गतिशील रहता है परंतु फिर भी हमारे जीने के तौर-तरीके संस्कारग्रस्त मन के द्वारा तय किए जाते हैं, और ऐसा मन जीवन की समस्याओं को अपनी सीमाओं के दायरे में ही ग्रहण करता है। इसलिए यदि हमें इस समस्या का समाधान करना है तो क्या यह महत्त्वपूर्ण नहीं होगा कि यह मालूम करें कि मन को संस्कारमुक्त कैसे किया जाए ताकि समस्याओं को महज़ सुलझाते रहने की बजाय समस्या का सीधे-सीधे सामना किया जा सके?

Most of us seek an answer to a problem. But, what is more important is how to meet the problem. If I know how to meet a problem, then I need not seek an

हममें से अधिकांश समस्या का हल खोजते हैं। किंतु महत्त्वपूर्ण यह है कि समस्या से सीधे-सीधे कैसे निपटा जाए। यदि मुझे यह मालूम हो कि समस्या का सामना प्रत्यक्ष रूप से

answer. It is because I do not know how to meet the problem—economic, social, religious, sexual—that I am confronted with, that my mind immediately seeks an answer, a way to resolve it. But if I know, if I am capable of meeting the problem, then I do not seek an answer. I shall meet and resolve it, or I shall know what to do with it. But as long as I do not know nor have the capacity to find out, I go to another, to a guru;s to a system, to a philosophy. All the gurus, all the teachers of philosophy, have completely failed because they make us into automatons, they tell us what to do. In the very process of following them in what we do, we create more problems.

कैसे किया जाता है तो मुझे हल खोजने की ज़रूरत नहीं रहेगी। मैं किसी भी समस्या का--आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, काम-भावना से जुड़ी समस्या का--सीधा सामना नहीं कर पाता, इसलिए जब भी वह उत्पन्न होती है मैं तत्काल कोई उत्तर खोजने लगता हूं ताकि उससे छुटकारा पा सकूं। परंतु यदि मुझे यह पता हो, यदि मैं समस्या का सीधे-सीधे सामना करने में सक्षम होता हूं तो मैं उत्तर ढूंढ़ने की कोशिश नहीं करता। अब मैं समस्या से सीधे-सीधे निपट लूंगा और उसका समाधान कर लूंगा या मुझे पता होगा कि इसके बारे में क्या किया जाए। परंतु जब तक मुझमें यह जानने की अथवा स्वयं पता लगा सकने की क्षमता नहीं होगी तब तक मैं किसी अन्य व्यक्ति के पास, किसी गुरु के पास जाता रहूंगा या किसी दार्शनिक विचार या प्रणाली का सहारा खोजता रहूंगा। सभी गुरु, दर्शनशास्त्र के सारे शिक्षक असफल रहे हैं क्योंकि वे हमें यंत्रमानव बना देते हैं, वे हमें बताते हैं कि हम क्या करें। और वे हमसे जो कुछ कहते हैं उसे करने में, उनका अनुकरण करने की प्रक्रिया में ही हम और अधिक समस्याएं उत्पन्न कर बैठते हैं।

So, is it not very important to find out how to think—but not what to do—and how to free the mind from all conditioning? A conditioned mind will translate the problems, will give significance to them, according to its conditioning, and the problems, when met with a limited mind, are only increased. It is therefore important to inquire if it is at all possible to free the mind from its own self created limitations so as to be able to meet the complications, the problems of living. I think the real issue is not whether you are a communist or a socialist or what not, but to be able to meet the very, very complex problems of living, totally anew, with a new mind, with a mind that is not burdened, a mind that has no conclusions.

इसलिए हमें क्या करना है इसे जानने की बजाय क्या यह समझना अधिक ज़रूरी नहीं है कि हम विचार कैसे करें और मन को तमाम संस्कारग्रस्तता से कैसे मुक्त करें? संस्कारबद्ध मन समस्याओं को अपनी सीमाओं के दायरे में ही ग्रहण करेगा, उन्हें कोई अलग अर्थ प्रदान करेगा। और सीमाबद्ध मन जब भी समस्याओं का सामना करता है उनमें इजाफा ही करता है। इसलिए इस बात की जांच की जानी महत्त्वपूर्ण है कि क्या मन को उसके स्वनिर्मित दायरों से स्वतंत्र किया जाना संभव है ताकि जीने की जटिलताओं का, जीवन की समस्याओं का वह सीधे सामना कर सके? मैं समझता हूं कि वास्तविक प्रश्न यह नहीं है कि आप कम्युनिस्ट हैं, सोशलिस्ट हैं या कुछ और हैं, बल्कि यह है कि जीने की इतनी अधिक जटिल समस्याओं का पूरी तरह नये ढंग से, एक नये मन के साथ--एक ऐसे मन के साथ जिस पर संस्कारों का बोझ न हो, जो निष्कर्षों से मुक्त हो--सीधे-सीधे सामना करने योग्य कैसे बनें।

Is it possible to have a new mind, a

क्या यह संभव है कि मन नया और ताजा हो,

fresh mind, a clear mind, a mind which is not polluted so as to meet this very living problem of existence? I say it is possible. Most of us think that it is impossible to free the mind of conditioning. We only think that the mind can be conditioned better, in a better pattern, into a better mould of action, but we have never asked ourselves if the mind can totally uncondition itself. I do not know if you have ever thought about this because most of us are thinking of how to improve, how to modify, how to change—the change, the modification, and the improvement being a better condition, a better social relationship, a modified capitalism, a change in our attitude. But we never ask ourselves if it is possible for the mind to be totally free from all conditioning so that it can meet life fully—life being not only the earning of a livelihood but the problem of war and peace, the problems of reality, of God, of death. Can all this, the whole process, be understood by a mind which is conditioned? Or is it not the function of education, from the very beginning until we pass out of the university, to help us understand the conditioning influences and to know how to improve them so that we are human beings in total revolution all the time?

सुस्पष्ट हो तथा किसी भी मलिनता से अछूता हो ताकि अस्तित्व के जीवंत प्रश्नों से प्रत्यक्ष संपर्क कर सके? मैं कहता हूं कि यह अवश्य संभव है। हममें से अधिकांश का सोचना यह है कि मन को संस्कारों से मुक्त कर पाना असंभव है। हम केवल यही सोचते हैं कि मन को सुसंस्कारित ही किया जा सकता है, इसे बेहतर आकार दिया जा सकता है, कर्म के अपेक्षाकृत उत्कृष्ट सांचे में ढाला जा सकता है, परंतु हमने स्वयं से यह कभी नहीं पूछा है कि क्या मन अपने आपको पूरी तरह से संस्कारमुक्त कर सकता है? पता नहीं आपने इस बारे में कभी सोचा है या नहीं, क्योंकि हममें से अधिकांश इसी बारे में सोचा करते हैं कि सुधार कैसे करें, बेहतर कैसे बनें, किस तरह बदलें--हम बदलाव, सुधार, बेहतरी, जैसे कि अधिक अच्छे सामाजिक संबंध, पूंजीवाद का संशोधन, तौर-तरीकों में बदलाव आदि में ही लगे रहते हैं। परंतु हम अपने आप से यह प्रश्न कभी नहीं पूछते कि मन के लिए सभी संस्कारों के बंधन से स्वयं को मुक्त कर पाना संभव है या नहीं, ताकि यह जीवन का पूरी तरह से सामना कर सके--और यहां जीवन का तात्पर्य सिर्फ जीविकोपार्जन तक सीमित न हो कर युद्ध और शांति की समस्या, परम सत्य से जुड़े प्रश्न, ईश्वर और मृत्यु की समस्या यह सब कुछ है। क्या किसी संस्कारबद्ध मन के लिए यह संभव है कि वह इस सब को, इस संपूर्ण प्रक्रिया को समझ पाए? इसलिए बिलकुल प्रारंभ से लेकर जब तक हम विश्वविद्यालय से पढ़कर बाहर नहीं आते तब तक, क्या यह कार्य शिक्षा का ही नहीं है कि वह हमें विभिन्न प्रकार से संस्कारित करने वाले प्रभावों को समझने में, और उन प्रभावों को कैसे सुधारा जाए यह जान पाने में, हमारी मदद करे ताकि हम हर समय अपने आप को पूर्ण क्रांति के दौर से गुज़रता हुआ पाएं?

It is very important to find out how the mind works. After all, education is to understand how the mind works and not merely to pass some examinations which will give us a job. It is the working of the mind that is creating mischief; that is what is producing wars. Though we have scientific knowledge sufficient to help man to live sanely with health and with all the things

मन किस ढंग से कार्य करता है, यह जानना बहुत महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षा का कार्य कुछ परीक्षाएं पास कर हमें नौकरियां पाने के योग्य बनाना ही नहीं है, बल्कि यह समझने में हमारी मदद करना भी है कि मन किस प्रकार से काम करता है। क्योंकि मन के कार्य करने का तरीका ही अनेक उपद्रवों का कारण है, यही अनेक युद्धों को जन्म देता है। हालांकि हमारे पास पर्याप्त वैज्ञानिक जानकारी है जिससे कि मनुष्य की सारी ज़रूरतें पूरी की जा सकती हैं और वह

that he needs, such living is almost impossible because the mind of man, which is conditioned as a Christian, a Hindu;s an Indian, a Pakistani, a communist, a socialist, a believer and a non believer, is preventing it. So is it not important for each of us to understand the mind, not according to Shankara or Buddha or Marx but according to ourselves, to see how our mind works? If we can understand, that will be the greatest revolution, and from there, a new series of actions can take place.

शारीरिक–मानसिक रूप से स्वस्थतापूर्वक जी सकता है, परंतु फिर भी ऐसा जीवन असंभव बना हुआ है क्योंकि मनुष्य का संस्कारित मन––ईसाई, हिंदू, भारतीय, पाकिस्तानी, कम्यूनिस्ट, सोशलिस्ट, आस्तिक एवं नास्तिक आदि––ऐसा नहीं होने देता। अतः हममें से हरएक के लिए मन को समझना क्या बहुत ज़रूरी नहीं है? शंकर, बुद्ध अथवा मार्क्स के अनुसार नहीं, बल्कि अपनी स्वयं की प्रज्ञा की रोशनी में समझना कि हमारा मन किस तरह से कार्य करता है। यदि हम यह समझ सकें तो यह सबसे बड़ी क्रांति होगी और उस क्रांति से कार्यों, गतिविधियों का एक नया सिलसिला आरंभ हो सकेगा।

So, how is one to understand the mind? What does that word understanding mean? Is it merely the verbal understanding, is it merely superficial(satahi) or is it the understanding that comes when, through the observation of the activities of the mind, there is awareness, knowledge, there is no judgment, there is no comparison, but an observation in which there is the cessation of the movement of the mind? You understand?

इसलिए प्रश्न यह है कि मन को किस तरह से समझा जा सकता है। समझ शब्द का अर्थ क्या है? क्या समझ से हमारा तात्पर्य केवल शाब्दिक स्तर से है, क्या यह सिर्फ ऊपरी तौर पर है, या यह ऐसी समझ है जो मन के काम करने के तौर–तरीकों के निरीक्षण से आती है, जब उसमें सजगता होती है, बोध होता है, जब हम मन के क्रिया–कलापों पर अपनी राय नहीं देते, उनकी तुलना नहीं करते बल्कि इतने गहन रूप से उनको देखते भर हैं कि मन की गतिविधि का पूरी तरह अंत हो जाता है। आप समझ रहे हैं न?

There is this problem of problems, the problem of war. There is the problem of hate, the problem of love, or whether there is reality, whether there is God. How is one to understand these problems? We can only understand them if we can approach them with a free, quiet mind—not a mind that has a conclusion, not a mind that says, 'I know how to deal with the problem,' but a mind that is capable of suspending all judgment, all comparison. You see, the difficulty is, is it not, our minds have been trained to function along a certain line. We know there is the conscious and the unconscious mind, and most of our activity is at the conscious level; we do not

जो एक समस्या तमाम दूसरी समस्याओं का सबसे बड़ा कारण है वह है युद्ध की समस्या। और भी अनेक समस्याएं हैं––जैसे घृणा की समस्या, प्रेम की समस्या या क्या किसी परम सत्य का अस्तित्व है, ईश्वर है या नहीं। हम उन्हें तब ही समझ सकते हैं जब हम उन पर मुक्त और शांत मन से विचार करें––जब हम किसी निष्कर्ष से बंधे न हों, जब हमारा मन 'मैं जानता हूं कि इस समस्या से कैसे निपटा जाता है' ऐसा न कहे बल्कि वह इस योग्य हो कि सारे अभिमतों से, सारी तुलनाओं से मुक्त रहते हुए उन पर ध्यान दे सके। इस बारे में हमारी एक कठिनाई यह भी है कि हमारे मन किसी तय लीक पर चलने के लिए प्रशिक्षित किए गए हैं। आप जानते ही हैं कि मन के कार्य चेतन और अवचेतन तलों पर होते हैं और हमारे अधिकांश क्रियाकलाप चेतन तल पर होते हैं, अपने मन की अवचेतन प्रक्रिया के बारे में हम

know the unconscious process of our mind. We have to earn a livelihood, or we do puja, or we imitate—all with the superficial mind. Is it not very important to understand the unconscious mind because that is the directive? To understand the unconscious mind requires that the conscious mind shall be still, and this is only possible when, through self-knowledge, through understanding the mind in relationship in daily life, I discover the process of my mind, being aware of the words I use, my habits, the way I talk, the customs, the rituals, those which I can see only in relationship with another.

कुछ नहीं जानते। हमें रोजी-रोटी कमानी होती है, हम पूजा करते हैं या किसी का अनुसरण करते हैं--यह सब हम सतही मन से किया करते हैं। क्या यह ज़रूरी नहीं है कि अवचेतन मन को समझा जाए क्योंकि वही तो हमें दिशा-निर्देश देता है? अचेतन मन को समझ पाने के लिए यह ज़रूरी है कि चेतन मन शांत हो रहे, और यह तब ही संभव होता है जब स्वयं को समझते हुए, रोजमर्रा के क्रियाकलापों के दौरान मन को समझते हुए, मैं अपने मन की संपूर्ण प्रक्रिया को सामने ले आता हूं--जब मैं अपने द्वारा प्रयोग किए जाने वाले शब्दों, अपनी आदतों, अपने बातचीत करने के ढंग, परंपराओं और रीति-रिवाज़ों आदि उन सारी चीज़ों के प्रति सजग रहता हूं जिन्हें मैं केवल दूसरों से किए जाने वाले अपने व्यवहार में ही देख सकता हूं।

So, to understand the mind, I have to discover the total process of myself. It is that discovery in relationship with another—which is, after all, society—that brings about a total revolution in me, and it is that revolution that can meet these constant conflicts of life, these troublesome and extraordinary problems of existence.

अतः मन को समझने के लिए मुझे अपनी संपूर्ण प्रक्रिया की खोज करनी होगी। जब मैं दूसरों से अर्थात समाज से अपने संबंधों के यथार्थ स्वरूप को खोलकर सामने ले आता हूं तो मेरे भीतर एक समग्र क्रांति घटित होती है और यही वह क्रांति है जो जीवन के इन सतत द्वंद्वों का, अस्तित्व की इन कष्टदायी और असाधारण समस्याओं का सही ढंग से सामना कर सकती है।

Perhaps, some of you would like to ask questions. There are no answers. There is only the problem, and if we are looking for an answer, we shall never understand the problem. If my mind is concerned with the solution of a problem, then I am not investigating the problem, I am only concerned with how to find out, how to resolve it.

शायद आपमें से कुछ लोग प्रश्न पूछना चाह रहे होंगे। उत्तर कहीं नहीं हैं। केवल समस्या ही होती है, और यदि हम किसी उत्तर की अपेक्षा करने लगते हैं तो हम समस्या को कभी समझ नहीं पाएंगे। यदि मेरा मन समस्या के हल की चिंता में डूबा रहता है तो मैं वास्तव में समस्या की जांच नहीं कर रहा हूं, मैं केवल यह चिंता कर रहा हूं कि समाधान कैसे मिले, इसे हल कैसे करें।

You ask a question hoping I will give an answer. To me, there is only the problem, no answer. I will show you why. If I can understand the problem, I do not have to seek an answer. But the understanding of the problem requires an astonishing

आप इस आशा से प्रश्न पूछते हैं कि मैं आपको उसका उत्तर दूंगा। मेरी दृष्टि यह है कि केवल समस्या ही होती है, उत्तर नहीं होता। मैं यह स्पष्ट करूंगा कि ऐसा क्यों है। यदि मैं समस्या को समझ लेता हूं तो उत्तर खोजने की ज़रूरत नहीं रह जाती है। परंतु समस्या को समझ सकने

intelligence which is denied when I am concerned with an answer. If I can meet, for example, the problem of death, if I can understand the whole implication of it, the problem ceases to exist, but I can understand it only when there is no fear.

के लिए अद्‌भुत प्रज्ञा का होना आवश्यक है, जो तब नहीं हो सकती जब मैं उत्तर की चिंता करने लगता हूं। उदाहरण के लिए मृत्यु की समस्या को देखें, यदि मैं उससे जुड़े सभी पहलुओं को समझ सकूं तो समस्या समाप्त हो जाती है, परंतु इस प्रकार की समझ तभी होती है जब भय नहीं होता।